हिन्दी एवं भाषा विज्ञान (स्नातकोत्तर उपाधि)

नाम	:	हिंदी एवं भाषाविज्ञान में दो वर्षीय स्नातकोत्तर उपाधि। इस उपाधि का संचालन हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग के अन्तर्गत किया जाएगा।
प्रवेश योग्यता	:	स्नातक अथवा समकक्ष उपाधि।
प्रवेश प्रक्रिया	:	इस उपाधि में प्रथम वर्ष में स्नातक उपाधि के अंकों की मेरिट के आधार पर प्रवेश। जिन्होंने स्नातक स्तर पर संस्कृत नहीं पढ़ी, उन्हें अनिवार्य संस्कृत का प्रश्नपत्र उत्तीर्ण करना होगा।
सीटें	:	विश्वविद्यालय की अन्य स्नातकोत्तर उपाधियों के समान इस उपाधि में दोनों वर्षों में 20–20 सीटें होंगी।
पाठ्यक्रम पद्धति	:	सम्पूर्ण पाठ्यक्रम दो वर्ष में पढ़ाया जाएगा, प्रत्येक वर्ष में दो सेमेस्टर होंगे प्रत्येक सेमेस्टर में पांच–पांच प्रश्न पत्र होंगे। सभी प्रश्न पत्र 80–80 अंकों के होंगे। कुल परीक्षा 2000 अंकों की होगी। सभी प्रश्नपत्रों में 20–20 अंक की आन्तरिक परीक्षा होगी। प्रथम वर्ष में 50 प्रतिशत या इससे अधिक अंक पाने वाले छात्र–छात्राएं अंतिम सेमेस्टर में लघुशोध कर सकेंगे। अन्य छात्र–छात्राओं को वैकल्पिक प्रश्नपत्र की पढ़ाई करनी होगी। अथवा परियोजना कार्य पूरा करना होगा। दूसरे/चौथे सेमेस्टर में शैक्षिक भ्रमण का आयोजन भी किया जाएगा।
शिक्षण/परीक्षा माध्यम	:	हिंदी/संस्कृत।
उत्तीर्णांक	:	विश्वविद्यालय की परीक्षा समिति एवं अकादमिक समिति के निर्णयों के अनुरूप होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर में केवल एक प्रश्न पत्र में श्रेणी सुधार/पुनः परीक्षा की अनुमति दी जायेगी। पहले व दूसरे सेमेस्टर की उपर्युक्त परीक्षाएं तीसरे व चौथे सेमेस्टर के साथ होंगी तीसरे व चौथे सेमेस्टर की परीक्षाएं अगले वर्ष प्रथम/द्वितीय सेमेस्टर के साथ सम्पन्न कराई जाएंगी।
परीक्षा	:	प्रत्येक सेमेस्टर के अन्त में क्रमशः दिसंबर और मई में परीक्षा संपन्न होगी। प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड होंगे। प्रथम खण्ड में चार में से दो दीर्घउत्तरी प्रश्नों (2 गुणा 20) और द्वितीय खण्ड में चार में से दो लघूत्तरी प्रश्नों (2 गुणा 10) के उत्तर देने होंगे। तीसरे खण्ड में सभी पांच अति लघूत्तरी प्रश्न अनिवार्य होंगे। तीसरे प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। 'साहित्यिक निबंध' के प्रश्नपत्र में पहले खंड में दो में से एक, दूसरे खंड में दो में से एक और दूसरे खंड चार में से दो निबंध लिखने होंगे। इनके लिए क्रमशः 40, 20 और 10–10 अंक निर्धारित होंगे।
अवधि	:	इस उपाधि को पूर्ण करने के लिए अधिकतम समय चार वर्ष होगा।
उपस्थिति	:	प्रत्येक सेमेस्टर में 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य होगी। इसमें विभागाध्यक्ष के स्तर से 05 एवं कुलपति के स्तर से 10 प्रतिशत की छूट प्रदान की जा सकेगी।
शैक्षिक भ्रमण	:	प्रत्येक सत्र में छात्र–छात्राओं को उनके विषय से संबंधित शैक्षिक एवं अकादमिक स्थानों पर भ्रमण–यात्रा पर ले जाया जाएगा। यात्रा का व्यय विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा।

पाठ्यक्रम की संक्षिप्त पृष्ठभूमि, व्यावहारिकता एवं उपयोगिता

भाषा और साहित्य मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक वस्तु और व्यावहारिक चेतना है जिसके दो मुख्य आयाम या प्रकार्य हैं– सौन्दर्यपरक और प्रयोजनपरक । व्यक्ति की सौन्दर्यपरक अनुभूतियों के आलम्बन रूप में भाषा आत्मकेन्द्रित और सर्जनात्मक होती है। भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का सम्बन्ध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन–व्यवहार से होता है। जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों (डोमेन) में आज हिंदी की अत्यधिक महत्ता है।

भारतीय संविधान निर्माताओं के मन में एक ऐसी सार्वदेशिक (राष्ट्रीय–अन्तरराष्ट्रीय) हिंदी के विकास की संकल्पना निहित थी जो राष्ट्र के अधिसंख्यक समुदाय के पारस्परिक सम्पर्क–संचार और शैक्षणिक–साहित्यिक–सांस्कृतिक प्रयोजनों के अतिरिक्त अन्य (प्रशासनिक, व्यावसायिक एवं वैधानिक) प्रयोजनों को भी सिद्ध करने में सक्षम हो। इन निर्देशों के अनुरूप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नई शिक्षा नीति में शिक्षण को अनुशिक्षण एवं स्वशिक्षण से जोड़ते हुए प्रथम चरण में हिंदी में राष्ट्रीय एकरूपता और रोजगार की संभावना बढ़ाने वाला द्विवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तैयार किया। इस समय देश के शताधिक विश्वविद्यालयों और सैकड़ों महाविद्यालयों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी के पाठ्यक्रम चल रहे हैं। इसी क्रम में उत्तराखंड संस्कृत विवि में हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग के तहत इस उपाधि को प्रस्तावित किया गया है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य और विषय–क्षेत्र :

1– विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में राजभाषा के रूप में प्रयुक्त हिंदी भाषा एवं साहित्य का गहन ज्ञान प्राप्त कराना ।

2– राष्ट्र की सामाजिक–आर्थिक–सांस्कृतिक विकास की आवश्यकताओं को दृष्टिगत संचार माध्यमों के उपयोग और भाषिक तथा सर्जनात्मक क्षमता सम्पन्न युवावर्ग उपलब्ध कराना।

3– राजभाषा और हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में विभिन्न पदों का दायित्व संभालने की दृष्टि से कार्यात्मक हिंदी और पत्रकारिता की अवधारणाओं, सिद्धान्तों, कर्तव्यों, अधिकारों आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान देते हुए व्यावहारिक सामर्थ्य का विकास करना।

4– कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, आभियांत्रिकी, वाणिज्य, प्रबन्धन, विधि आदि क्षेत्रों में हिंदी के अनुप्रयोगों में दक्ष कार्यकर्ता, अनुवादक और दुभाषिए तैयार करना।

5– शैली विज्ञान, भाषा एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग, सर्वेक्षण और शोध, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता आदि अन्य व्यवहार–पक्षों एवं भाषायी कौशलों का विकास कर सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं निजी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना ।

6– ऐसे युवाओं को तैयार करना जिन्हें हिंदी भाषा के साथ–साथ उसके साहित्य और संवेदनात्मक पक्षों की भी समझ हो।

प्रथम सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–1

हिंदी साहित्य का इतिहास

इतिहास–दर्शन और साहित्येतिहास
हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा
हिंदी साहित्य का इतिहास : काल विभाजन, सीमा–निर्धारण
आदिकाल की पृष्ठभूमि एवं नामकरण, सिद्ध और नाथ–साहित्य, रासो–काव्य परंपरा, जैन–साहित्य
हिंदी साहित्य के आदिकाल की प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएं
पूर्व मध्यकाल (भक्ति काल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक चेतना एवं भक्ति आन्दोलन, विभिन्न काव्यधाराएं तथा उनका वैशिष्ट्य–ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी, राम काव्य, कृष्ण काव्य धारा
उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल–सीमा और नामकरण,
रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं (रीति सिद्ध रीति बद्ध और रीति मुक्त) प्रवृत्तियां और विशेषताएं, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएं।
आधुनिक काल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियां
भारतेंदु युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं
द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं
हिंदी में स्वच्छंदतावादी चेतना का विकास
छायावादी काव्य : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं
उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियां– प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं
हिंदी गद्य की विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज) का उद्‌भव और विकास।

प्रश्नपत्र–2

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

व्याख्या एवं विवेचन के लिए निम्नांकित 9 कवियों में से किन्हीं 6 कवियों का अध्ययन किया जाएगा।
1–चंदबरदाई : पृथ्वीराज रासो (पद्‌मावती समय), सम्पादक हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नामवर सिंह
2–विद्यापतिः विद्यापति पदावली, सम्पादक रामवृक्ष बेनीपुरी (शुरू के 20 पद)।
3–कबीरः कबीर ग्रंथावली, सम्पादक डॉ. श्यामसुन्दर दास (गुरुदेव कौ अंग, सुमिरन कौ अंग, विरह कौ अंग)।
4–जायसीः पद्‌मावत, सम्पादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल (मानसरोदक खंड एवं नागमती वियोग खंड)।
5–सूरदासः भ्रमरगीत सार, सम्पादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल (20 पद) (पद संख्या 50 से 70)।
6–तुलसीदासः रामचरितमानस का उत्तरकाण्ड (गीता प्रेस) (20वें दोहे से अंत तक)।
7–घनानंदः घनानंद कवित्त, सम्पादक आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (शुरू के 15 पद)।
8–बिहारीः बिहारी रत्नाकर, सम्पादक जगन्नाथदास रत्नाकर (शुरू के 30 दोहे)।
9–भूषण : शिवा बावनी (शुरू के 10 छंद)

प्रश्नपत्र–3
आधुनिक हिंदी काव्य

व्याख्या एवं विवेचन के लिए निम्नांकित 9 कवियों में से किन्हीं 6 कवियों का अध्ययन किया जाएगा।

1–मैथिलीशरण गुप्तः साकेत (नवम सर्ग)
2–जयशंकर प्रसादः कामायनी (चिंता, श्रद्धा, आनंद सर्ग)
3–सूर्यकांत त्रिपाठी निरालाः राम की शक्ति पूजा
4–सुमित्रानंदन पन्तः (3 कवितायें) परिवर्तन, नौकाविहार, मौन निमंत्रण,
5–रामधारी सिंह 'दिनकर': कुरुक्षेत्र (छठा अंक)
6–सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय': नदी के द्वीप, असाध्य वीणा
7–गजानन माधव 'मुक्तिबोध': अँधेरे में
8–नागार्जुनः बादल को घिरते देखा, सिन्दूर तिलकित भाल
9–भवानीप्रसाद मिश्र : गीतफरोश

प्रश्नपत्र–4
भाषा, ध्वनि विज्ञान एवं रूप विज्ञान

पाठ्यविषय : भाग–1

1 भाषा– अर्थ एवं विकास, परिभाषा, भाषा के विविध रूप

भाषा–व्यवस्था और भाषा–व्यवहार : भाषा की संरचनात्मक और प्रकार्यात्मक संकल्पना, भाषा–प्रकार्य, अभिलक्षण, भाषा और बोली, प्रयुक्ति की संकल्पना, भाषा–व्यवहार के संदर्भ और भाषा–विकल्पन ।

2 भाषा विज्ञान का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र, अध्ययन पद्धतियां
3 भाषा विज्ञान का अन्य विषयों से संबंध
4 भाषा की प्रकृति और मानव–भाषा की विशेषताएं
5 संसार की भाषाओं का वर्गीकरण, पारिवारिक वर्गीकरण एवं आकृतिमूलक वर्गीकरण की विशेषताएं
6 संसार के प्रमुख भाषा परिवार, भारोपीय परिवार का अध्ययन

पाठ्यविषय : भाग–2

1 ध्वनि का अर्थ एवं परिभाषा
2 स्वन एवं स्वनिम का अर्थ, महत्त्व 3 ध्वनियों का वर्गीकरण
4 ध्वनि गुण–मात्रा, आघात, स्वराघात। अल्पप्राण–महाप्राण, घोष–अघोष
5 ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं
6 ध्वनि नियम–ग्रिम नियम, ग्रेसमैन नियम, वर्नर नियम
7 हिंदी स्वनिम : स्वर, व्यजंन

पाठ्यविषय : भाग–3

1 रूप–परिभाषा, स्वरूप एवं प्रकार
2 रूप–तात्विक विवेचन
3 रूप–विश्लेषण
4 रूप (पद) परिवर्तन के कारण और दिशाएं

प्रश्नपत्र–5
काव्यशास्त्र

पाठ्यविषय : भाग–1

संस्कृत काव्य शास्त्र की परंपरा और सिद्धांत

काव्यलक्षण, काव्यहेतु, काव्यप्रयोजन, काव्य के प्रकार।

रस सिद्धान्त : रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।

अलंकार सिद्धान्त : मूल स्थापनाएं, अलंकारों का वर्गीकरण।

रीति सिद्धान्त : रीति की अवधारणा, काव्य गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएं, औचित्य सिद्धान्त।

वक्रोक्ति सिद्धान्त : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद।

ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएं, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद।

काव्य भाषा और सामान्य भाषा में अंतर, काव्य भाषा की प्रक्रियाएं, चयन, समानांतरता, प्रतीकात्मकता, बिंबात्मकता

पाठ्यविषय : भाग–2

पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवं चिंतक

साहित्यशास्त्र की पाश्चात्य अवधारणा

प्रमुख चिंतक एवं उनके सिद्धांत

प्लेटो : काव्य सिद्धांत

अरस्तु : अनुकरण सिद्धांत एवं त्रासदी विवेचन

लौंजाइनस : उदात्त की अवधारणा

क्रौंचे : अभिव्यंजनावाद

वड्र्सवर्थ : काव्य भाषा का सिद्धांत

द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–1
आधुनिक गद्य साहित्य

व्याख्या एवं विवेचन के लिए निर्धारित पुस्तकें–
1–आषाढ़ का एक दिन (मोहन राकेश)
2–गोदान (प्रेमचंद)
3–निबंध संकलनः निम्नलिखित छह निबंधकारों के चयनित निबंधों का अध्ययन– आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. पीतांबर दत्त बड़थ्वाल, डॉ. रामविलास शर्मा, विद्या निवास मिश्र। (हिन्दी के ग्यारह श्रेष्ठ निबन्ध – सम्पादक डॉ. मधु शर्मा, सरस्वती प्रेस, देहरादून।)

(1) कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता (आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी)
(2) कविता क्या है? (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)
(3) उत्तराखण्ड में संत मत और संत साहित्य (डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल)
(4) अशोक के फूल (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी)
(5) सौन्दर्य की वस्तुगत सत्ता और सामाजिक विकास (डॉ. राम विलास)
(6) अस्ति की पुकार हिमालय (आचार्य विद्या निवास मिश्र)

4–कहानीः निम्नलिखित छह कहानियों का अध्ययन।
शतरंज के खिलाड़ी– प्रेमचंद, नीली झील– कमलेश्वर, वापसी– उषा प्रियंवदा, दोपहर का भोज– अमरकांत, टूटन– राजेन्द्र यादव, दो दुखों का एक सुख– शैलेश मटियानी

प्रश्नपत्र–2
साहित्यालोचन

हिंदी आलोचना के उदय की परस्थितियां,
प्रारम्भिक हिंदी आलोचना का स्वरूप,
पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिंदी आलोचना,
हिंदी आलोचना का ऐतिहासिक क्रम–विकास,
शुक्लपूर्व हिंदी आलोचना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल : सैद्धांतिक चिंतन एवं व्यावहारिक पक्ष,
शुक्लोत्तर हिंदी– आलोचना, स्वातन्त्रयोत्तर हिंदी आलोचना.
हिंदी के प्रमुख आलोचकों की आलोचनात्मक अवधारणाओं और पद्धतियों–प्रतिमानों का अध्ययन।
हिंदी आलोचना की विविध प्रणालियाँः काव्यशास्त्रीय, स्वच्छंदतावादी, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, व्यक्तिवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, प्रभाववादी, समाजशास्त्रीय, संरचनावादी, शैलीवैज्ञानिक, तुलनात्मक आलोचना।
आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ : संरचनावाद, विखंडनवाद, उत्तर–आधुनिकता
व्याख्या एवं आलोचना हेतु निर्धारित ग्रन्थ–
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : कबीर
डॉ. रामविलास शर्मा : भाषा और समाज

प्रश्नपत्र–3
अर्थ विज्ञान एवं वाक्य विज्ञान

पाठ्यविषय : भाग–1

1 शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ–प्रतीति, अर्थ–बोध के साधन
2 अर्थ परिवर्तन की दिशाएं, अर्थ परिवर्तन के कारण
3 पर्याय विज्ञान–पर्यायों के विकास के कारण
4 अनेकार्थता और विलोमता, समानार्थी
5 बौद्धिक नियम
6 शब्द शक्तियां–अभिप्राय और उनकी महत्ता
7 अर्थ–तत्व एवं संबंध–तत्व का महत्त्व
8 शब्द की परिभाषा एवं शब्दों का वर्गीकरण– 1 व्याकरण 2 उद्‌गम 3 रचना 4 अर्थ के आधार पर

पाठ्यविषय : भाग–2

1 वाक्य की परिभाषा एवं महत्त्व
2 वाक्यों के प्रकार
3 वाक्य संरचना
4 निकटस्थ अवयव

प्रश्नपत्र–4
कोश विज्ञान एवं लिपि विज्ञान

पाठ्यविषय : भाग–1

1 कोश : परिभाषा, स्वरूप, महत्त्व । कोश और व्याकरण । कोश के भेद ।
कोश – निर्माण की प्रक्रिया : सामग्री संकलन, प्रविष्टिक्रम, व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, व्युत्पत्ति, अर्थ (पर्याय, व्याख्या, चित्र) प्रयोग, उपप्रविष्टियाँ, संक्षिप्तियां, संदर्भ और प्रतिसंदर्भ।
2 प्रविष्टि संरचना, रूपिम, शब्द और शब्दिम, सरल, व्युत्पन्न और सामासिक, सामासिक शब्दिम, सहप्रयोगात्मक, व्युत्पादक समास, सहप्रयोग और संदर्भ ।
3 रूप–अर्थ सम्बन्ध : अनेकार्थकता, समानार्थकता, समध्वन्यात्मकता, विलोमता। कोश निर्माण की दिक्कतें
4 हिंदी कोश साहित्य का संक्षिप्त इतिहास । स्वचालित सामग्री संसाधन, कम्प्यूटर और कोश निर्माण : संक्षिप्त परिचय ।

पाठ्यविषय : भाग–2

1 लिपि की उत्पत्ति–विकास एवं महत्त्व
2 लिपि के विकास क्रम की अवधाराणाएं
3 भारतीय लिपियां–सिंधु घाटी की लिपि, खरोष्ठी, ब्राह्मी, देवनागरी
4 द्रविड़ परिवार की भाषाएं एवं उनकी लिपियां
5 लिपि की उपयोगिता
6 देवनागरी लिपि का विकास, देवनागरी लिपि के गुण और दोष
7 लिपि में सुधार हेतु प्रयास
8 लिपि और कंप्यूटर अनुप्रयोग

प्रश्नपत्र–5
हिंदी का भाषिक स्वरूप एवं व्याकरण

पाठ्यविषय : भाग–1

हिंदी का भाषिक स्वरूप

हिंदी का विकास : प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ–वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएं। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ– पाली, प्राकृत और अपभ्रंश। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण, ग्रियर्सन के अनुसार वर्गीकरण।

हिंदी की उप भाषाएँ– पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, पहाड़ी, बिहारी तथा उनकी बोलियां

हिंदी के विविध रूप : संपर्क–भाषा, राष्ट्र भाषा, राजभाषा के रूप में हिंदी, माध्यम–भाषा, संचार–भाषा

1–प्रयोजनमूलक भाषा और प्रयुक्ति : संकल्पना; निर्धारक तत्त्व और महत्त्व।

प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रमुख व्यवहार–क्षेत्र :

क– कार्यालयी/प्रशासनिक हिंदी, (ख) वित्त और वाणिज्य क्षेत्र में हिंदी, (ग) विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी में हिंदी, (घ) मीडिया और जनसंचार माध्यमों में हिंदी, (ङ) विज्ञापन में हिंदी, (च) कम्प्यूटर क्षेत्र में हिंदी, (छ) सर्जनात्मक हिंदी ।

पाठ्यविषय : भाग–2

1 भारतीय व्याकरण की परंपरा–

–संस्कृत की व्याकरण परंपरा,

–हिंदी की व्याकरण परंपरा

2 संस्कृत के प्रमुख वैयाकरण एवं उनके ग्रंथ

3 पाणिनी, पतंजलि, यास्क का व्याकरणिक महत्त्व

4 हिंदी वैयाकरण पंडित कामताप्रसाद गुरु, सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, किशोरीदास वाजपेयी की देन

नोट – तीसरे सेमेस्टर में चतुर्थ और पंचम प्रश्नपत्र में अनुवाद और पत्रकारिता का विकल्प दिया गया है। जो छात्र–छात्राएं चतुर्थ प्रश्नत्र के तौर पर अनुवाद का विकल्प चुनेंगे, उन्हें पंचम प्रश्नपत्र के तौर पर भी अनुवाद का ही अध्ययन करना होगा। यही नियम पत्रकारिता के प्रश्नपत्रों पर भी लागू होगा।

तृतीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–1

भाषा प्रौद्योगिकी

पाठ्यविषय : भाग–1

1 भाषा प्रौद्योगिकी–अवाधारणा, भाषा के तकनीकी पहलू

2 भाषा प्रौद्योगिकी–उद्भव, प्रकार एवं विवेचन, विविध आयाम

3 भाषा प्रौद्योगिकी–वर्तमान स्थिति एवं संभावनाएं

4 भाषा इंजीनियरिंगः वर्तमान स्वरूप, संभावनाएं और चुनौतियां

5 कार्पस भाषा विज्ञान–परिभाषा, प्रकार, उपयोग

पाठ्यविषय : भाग–2

1 संगणकीय भाषा विज्ञान – मौलिक अवधारणाएं, सर्वेक्षण और उपलब्ध सामग्री परिचय

2 संस्कृत, हिंदी छात्रों के लिए कंप्यूटर का व्याकरण एवं कंप्यूटर का उपयोग

3 e-पाठशाला, e-शिक्षा आदि

4 इंटनेट–सर्च इंजन, वेब डिजाइन, ब्राउजर, मेल, टेलनेट

प्रश्नपत्र–2

राजभाषा हिंदी

पाठ्य विषय :

1. प्रशासन–व्यवस्था और भाषा । राजभाषा (प्रशासनिक/कार्यालयी हिंदी) की प्रकृति।
   राजभाषा विषयक सांवैधानिक प्रावधान : राजभाषा प्रावधान (अनुच्छेद 343 से 351 तक); राष्ट्रपति के आदेश (1952, 1955, 1961.); राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित 1967); राजभाषा संकल्प, 1968 (यथानुमोदित 1991); राजभाषा नियम, 1976 ।
2. राजभाषा का अनुप्रयोगात्मक पक्ष : टिप्पण, प्रारूपण, संक्षेपण, प्रतिवेदन । टिप्पण : लेखन के उद्देश्य, संचिका (पत्रावली / फाइल), लेखन–प्रक्रिया एवं मुख्य अंग, प्रकार।
3. प्रारूपण (मसौदा लेखन) : स्वरूप, लेखन के उद्देश्य, पत्राचार, शब्दावली और भाषा–शैली ।
   प्रशासनिक पत्राचार : सैद्धान्तिक संदर्भ और ध्यातव्य बातें। प्रमुख प्रकार और प्रयोग–क्षेत्र : पत्र, स्मरण पत्र, अंतरिम उत्तर, पावती; अर्धसरकारी पत्र, कार्यालय आदेश, आदेश; कार्यालय ज्ञापन, ज्ञापन; परिपत्र; पृष्ठांकन; गजट, अधिसूचना, संकल्प; आवेदन पत्र, निविदा सूचना, सार्वजनिक सूचना, अंतरविभागीय टिप्पणी
4. संक्षेपण : संक्षेपण और सार लेखन, संक्षेपण के प्रकार : निरन्तर वृद्धि से संक्षेपण, सारणीबद्ध संक्षेपण । विशेषताएँ, उपयोग और महत्त्वपूर्ण बिन्दु ।
   प्रतिवेदन : सरकारी बैठकें; नियोजन, आयोजन और संयोजन पक्ष; कार्यसूची और कार्यवृत्त, प्रतिवेदन लेखन का उद्देश्य, प्रकार, ध्यातव्य बिन्दु ।
5. हिंदी संकेताक्षर और कूटपद निर्माण। प्रशासनिक शब्दावली।

प्रश्नपत्र–3
भारतीय साहित्य

पाठ्यविषय :भाग–1

भारतीय साहित्य का स्वरूप।

भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ।

भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब।

भारतीयता का समाजशास्त्र।

हिंदी साहित्य में भारतीयता के मूल्य

पाठ्यविषय :भाग–2

निम्नलिखित कृतियों का विवेचन एवं अध्ययन किया जाएगा

'हयवदन', गिरीश कर्नाड, कन्नड नाटक

'मृत्युंजय', वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य, असमिया उपन्यास

'बीच का रास्ता नहीं होता', पाश, पंजाबी काव्य

प्रश्नपत्र–4
हिंदी पत्रकारिता

पाठ्य विषय : भाग–1

1–भारतीय नवजागरण : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। मीडिया तकनीकी का प्रसार और यूरोपियों की पत्रकारिता। भाषायी और हिंदी पत्रकारिता का उदय एवं पुनर्जागरण में भूमिका ।

हिंदी पत्रकारिता का विकास और भारतेन्दु युग : विचारधारा, भाषा एवं पत्रकारिता के स्वरूप के समेकन का युग। प्रेस नियंत्रण एवं पुस्तक पंजीकरण संबंधी 1823ए 1835ए 1857ए 1867ए 1878 ई. के अधिनियम एवं अन्य प्रतिबन्ध।

मालवीय, तिलक और द्विवेदीयुगीन पत्रकारिता : युगीन प्रवृत्तियां, विचारधारा और भाषायी अभिलक्षण ।

2– गाँधीयुगीन हिंदी पत्रकारिता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ । शासन का शिकंजा और क्रान्तिकारी पत्रकारिता । भारतीय मुक्ति संग्राम में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका । शासकीय गुप्त बात अधिनियम (1923) एवं अन्य प्रतिबन्ध।

पाठ्य विषय : भाग–2

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता और प्रेस–विधि :

1–भारतीय संविधान में मूल अधिकार और कर्तव्य। पत्रकारिता के क्षेत्र में व्यावसायिक पूंजी का प्रवेश और प्रतिष्ठानी पत्र–पत्रिकाओं (मीडिया घरानों) का उत्तरोत्तर विकास । प्रमुख प्रवृत्तियां ।

2–आर्थिक उदारीकरण और सूचना–क्रान्ति का भारतीय परिदृश्य : प्रेस स्वतंत्रता : सूचना प्राप्ति और सम्प्रेषण का अधिकार।

3–सूचना तकनीकी और प्रौद्योगिकी के आधुनिकीकरण का दौर और दबाव । स्वतंत्र भारत में हिंदी पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियां और नए दायित्व । इंटरनेट पत्रकारिता के विकास का संक्षिप्त परिचय । प्रतिलिप्यधिकार (कॉपीराइट)

4–द्वितीय प्रेस आयोग : स्थापना के उद्देश्य, संस्तुतियां एवं कार्रवाई । प्रेस परिषद अधिनियम, 1978 । प्रेस और जनसंचार के संदर्भ में अश्लीलता, अपमान लेख अथवा प्रस्तुतीकरण, मानहानि, स्त्री–गरिमा। श्रमजीवी पत्रकार, 5–पत्रकारों के लिए आचार–संहिता

अथवा

प्रश्नपत्र–4

अनुवाद : सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग–।

पाठ्यविषय : भाग–1

अनुवाद के आयाम : अनुवाद की महत्ता, स्वरुप एवं अर्थ, प्रकृति एवं सीमाएं

1 अनुवाद का संरचात्मक पहलू

2 व्यतिरेकी अध्ययन : अ– व्यतिरेकी विश्लेषण, ब– व्यतिरेकी भाषा विज्ञान

3 उक्ति, प्रोक्ति, सूक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति

4 अनुवाद की विचारधाराएं : प्राचीनकाल से लेकर उत्तर–आधुनिक काल तक

5 भाषा विज्ञान और अनुवाद का शास्त्र

पाठ्यविषय : भाग–2

1– हिंदी में अनुवाद की परंपरा, अनुवाद की उपयोगिता

2– अनुवाद–प्रक्रिया : पाठ–पठन, विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन। नाइडा, न्यूमार्क और बाथगेट के प्रारूप। अनुवादक की भूमिका के विभिन्न पक्ष और योग्यताएँ। अनुवाद और समतुल्यता का सिद्धान्त।

3– स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा।

4– पारिभाषिक शब्दावली, शीर्षक, लाक्षणिक प्रयोग, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ, आंचलिक भाषाप्रयोग, पदनाम एवं संक्षिप्ताक्षर : हिंदी अनुवाद का संदर्भ ।

प्रश्नपत्र–5

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता

पाठ्यविषय : भाग–1

1– साहित्यिक पत्रकारिता : अर्थ, अवधारणा और महत्त्व । हिंदी नवजागरण और साहित्यिक पत्रकारिता : स्वरूप और विकास ।
भारतेन्दुयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियां । द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियां ।

2– प्रेमचंद और छायावादयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियां प्रेमचंदोत्तर साहित्यिक पत्रकारिता : असहयोग और क्रान्तिकारी आन्दोलन के संदर्भ ।

3– स्वत्रंतता के बाद की साहित्यिक पत्रकारिता (1950 से वर्तमान तक) : परिचय और प्रवृत्तियां समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियां

4– साहित्यिक पत्रकारिता : भाषा के प्रतिमान, हिंदी–हिन्दुस्तानी विवाद, अँग्रेजी हटाओ आन्दोलन । साहित्यिक पत्रकारिता : स्त्री, दलित, मानवाधिकार एवं अन्य सामयिक मुद्दे । साहित्यिक समाचार, साहित्यिक गोष्ठी / संगोष्ठी / सम्मेलन / अधिवेशन आदि की रपट। फीचर, साक्षात्कार, परिचर्चा आदि ।

5– दैनिक पत्रों के साहित्यिक परिशिष्टों का सम्पादन, साहित्यिक स्तम्भों का निर्धारण, साहित्यिक पत्रिकाओं के सामान्य और विशिष्ट अंकों का सम्पादन : सिद्धान्त और व्यवहार।

पाठ्यविषय : भाग–2

1– सांस्कृतिक पत्रकारिता : अवधारणा, अर्थ और महत्त्व । परम्परागत, आधुनिक और उत्तर आधुनिक समाज । संस्कृति, लोकसंस्कृति, लोकप्रिय संस्कृति, अपसंस्कृति। बाजार, संस्कृति और संचार माध्यम । मौखिक और दृश्य संचार : परम्परागत रूप, शैली और प्रौद्योगिकी के साथ समन्वित उपयोग ।

2– सांस्कृतिक संवाद : अर्थ, भेद और विशेषताएँ । सांस्कृतिक संवाददाता की योग्यताएँ : आस्वादन, अन्वीक्षण, कल्पनाशीलता आदि । सांस्कृतिक संवाद के क्षेत्रों का परिचय – मंचकला, पर्यटन, लोककलाएं आदि ।

अथवा

प्रश्नपत्र–5

अनुवाद : सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग–।।

पाठ्यविषय : भाग–1

1 अनुवाद – समस्या एवं परीक्षण, समाधान

2 अनुवाद – अनुप्रयोगात्मक पक्ष

– वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद

– साहित्यिक– सांस्कृतिक अनुवाद

– मानविकी एवं समाज विज्ञान अनुवाद

– कार्यालयी एवं प्रशासनिक अनुवाद

– मीडिया के लिए अनुवाद

3 तकनीकी अनुवाद

– परिचय एवं इतिहास

– व्याकरणिक ढांचा

– अनुवाद की समस्याएं

पाठ्यविषय : भाग–2

1– अनुवाद के प्रकार : माध्यम, प्रक्रिया और पाठ के आधार पर,आशु अनुवाद एवं दुभाषिया प्रविधि।

2– अनुवाद–सामग्री के प्रकार और अनुवाद की समस्याएँ : सर्जनात्मक साहित्य, मानविकी एवं तकनीकी साहित्य, विधि साहित्य, कार्यालयी सामग्री, बैंकिंग शब्दावली, मीडिया एवं विज्ञापन क्षेत्र

3– उपर्युक्त क्षेत्रों के अनुवाद में आने वाली समस्याओं का समाधान।

4– अनुवाद : पुनरीक्षण, सम्पादन, मूल्यांकन। अनुवाद का उत्तर अनुवाद

5– मशीनी अनुवाद : संभावनाएँ और सीमाएँ।

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–1
संचार भाषा एवं सर्जनात्मक लेखन

पाठ्यविषय : भाग–1

1–हिंदी संचार माध्यम –श्रव्य, दृश्य, श्रव्य–दृश्य।

2–भाषा और समाज का अंतर्सम्बन्ध, संचार–प्रक्रिया में हिंदी भाषा का महत्त्व ।

3–संचार भाषा के रूप में हिंदी।

4–मानक भाषा और हिंदी का मानकीकरण

5–विभिन्न संचार माध्यमों में हिंदी भाषा–प्रयोग; माध्यम भेद और भाषिक वैशिष्ट्य। भूमण्डलीकरण और संचार–क्रान्ति के परिप्रेक्ष्य में हिंदी का भविष्य ।

पाठ्यविषय : भाग–2

1. रिपोर्ताज (फीचर / रूपक) : अर्थ, स्वरूप, रिपोर्ताज एवं अन्य गद्य रूप, रिपोर्ताज और फीचर, लेखन–प्रविधि, महत्त्व ।
   फीचर लेखन : विषय–चयन, सामग्री–निर्धारण, लेखन–प्रविधि । सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, विज्ञान, पर्यावरण, खेलकूद से सम्बद्ध विषयों पर फीचर लेखन ।
2. साक्षात्कार (इंटरव्यू / भेंटवार्ता) : उद्देश्य, प्रकार, साक्षात्कार–प्रविधि, महत्त्व ।
   स्तंभ लेखन : समाचार पत्र के विविध स्तंभ, स्तंभ लेखन की विशेषताएं, समाचार पत्र और सावधिक पत्रिकाओं के लिए समसामयिक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक सामग्री का लेखन ।
3. दृश्य–सामग्री (छायाचित्र, कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स आदि) से सम्बन्धित लेखन ।
   पार्श्वदृश्य (प्रोफाइल) लेखन । स्वतंत्र (फ्रीलांस) और प्रकाशन संघ (सिंडिकेट) लेखन ।
4. बाजार, खेलकूद, फिल्म, पुस्तक और कला समीक्षा ।
   आर्थिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, ग्रामीण और विकास पत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता ।

प्रश्नपत्र–2
नाटक एवं रंगमंच

पाठ्यविषय :भाग–1

नाटक और रंगमंच का स्वरूप

नाट्योत्पत्ति सम्बन्धी विविध मत

नाट्य अध्ययन का स्वरूप

- नाटक का विधागत वैशिष्ट्य
- नाटक और रंगमंच का अंतःसंबंध
- नाटक में दृश्य और श्रव्य तत्वों का समायोजन

नाट्य–भेद

- भारतीय रूपक–उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय)
- पारम्परिक नाट्य–रूप : रामलीला, रासलीला, स्वांग, नौटंकी, ख्याल, विदेसिया आदि।
- पाश्चात्य नाटक (सामान्य परिचय)

नाट्य–विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन

रंगमंच के प्रकार, रंगशिल्प, रंग संप्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त)

हिन्दी नाटक और रंगमंच का संक्षिप्त इतिहास–विकास

– नाटक का विकास : भारतेन्दु युग, प्रसाद युग, स्वातंत्र्योत्तर काल, नया नाटक।

रंगमंच : लोक–नाट्य (व्यावसायिक, अव्यावसयिक)

– पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, प्रमुख सरकारी रंग संस्थाएँ, नुक्कड़ नाटक।

हिन्दी नाट्य–चिंतन – भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश।

पाठ्यविषय :भाग–2

निम्नलिखित नाटकों का विवेचनात्मक अध्ययन किया जाएगा, इनमें से व्याख्यात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

1. अंधेरनगरी – भारतेंदु
2. अजात शत्रु – जयशंकर प्रसाद
3. अंधा युग – धर्मवीर भारती

प्रश्नपत्र–3
साहित्यिक निबंध

पाठ्यविषय :भाग–1

पूर्व पीठिका एवं आदिकाल – हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा, हिन्दी साहित्येतिहास में काल–विभाजन एवं नामकरण, आदिकालीन हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रासो काव्य परम्परा।

भक्ति काल : भक्ति आन्दोलन के उदय के ऐतिहासिक तथा सामाजिक–सांस्कृतिक कारण। भक्ति काल : हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग, संत काव्य परम्परा, कबीर का समाज दर्शन, सूफी काव्यधारा में जायसी का स्थान, रामकाव्य परम्परा, तुलसी का लोकनायकत्व/समन्वयवाद, कृष्णकाव्य परम्परा, सूरदास के भ्रमरगीत की विशेषताएँ/सूर का वात्सल्य वर्णन।

रीतिकाल : रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और दरबारी संस्कृति, रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रीतिमुक्त काव्यधारा और उसके कवि।

आधुनिक काल : हिन्दी नवजागरण और भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, स्वच्छंदतावादी काव्य, राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता, समकालीन कविता, हिन्दी नवगीत।

हिन्दी पद्य की प्रमुख विधाओं का विकास– महाकाव्य, खण्ड काव्य, गीतिकाव्य, मुक्तक।

हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं का विकास – उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, एकांकी, संस्करण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा। हिन्दी आलोचना का विकास।

विविध : हिन्दीतर राज्यों का हिन्दी लेखन, हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य।

पाठ्यविषय :भाग–2

काव्य शास्त्र – काव्य की मूल प्रेरणा और उसका प्रयोजन, सत्यं शिवं सुन्दरं, रस सम्प्रदाय, रसनिष्पत्ति और साधारणीकरण, अलंकार सम्प्रदाय, ध्वनि सम्प्रदाय, वक्रोक्ति सम्प्रदाय, रीति सम्प्रदाय, औचित्य सिद्धान्त, प्लेटो के काव्य सिद्धान्त, अरस्तू के काव्य सिद्धान्त, लोंजाइनस का औदात्य विवेचन, आई०ए० रिचर्ड्स के काव्य सिद्धान्त, क्रोचे का अभिव्यंजनावाद।

पाश्चात्य समीक्षा के विभिन्न वाद, हिन्दी आलोचना के विविध रूप, उत्तर आधुनिकता, स्त्री एवं दलित विमर्श।

भाषा विज्ञान – हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास, हिन्दी की उप–भाषाएँ और बोलियाँ, राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी, हिन्दी का मानकीकरण और कम्प्यूटरजनित समस्याएँ, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और गुण–दोष।

व्यावसायिक हिन्दी – व्यावसायिक हिन्दी और उसका स्वरूप।

हिंदी पत्रकारिता – हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास, प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व, पत्रकारिता सम्बन्धी लेखन, विज्ञापन कला, भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार, मानवाधिकार एवं सूचना का अधिकार, सूचना प्रौद्योगिकी।

प्रश्नपत्र–4
शोध–प्रविधि

1– शोध : अवधारणा, परिभाषा, स्वरूप, तत्त्व, शोध और संचार सिद्धान्त, भूमिका, प्रकार्य, क्षेत्र और महत्त्व। शोध के प्रकार। भाषा शोध।

2– शोध–प्रविधि : सर्वेक्षण, सामग्री विश्लेषण, केस स्टडी, समूह चर्चा, पैनल चर्चा, द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषण, प्रलेख आधारित शोध और पुस्तकालय शोध ।

3– साक्षात्कार अनुसूची और प्रश्नावली – उपयोग, लाभ, समस्याएं और इनकी तुलना । साक्षात्कार–अनुसूची और प्रश्नावली की रचना । साक्षात्कार की कला और ध्यातव्य बातें ।

4– आधार सामग्री संसाधन – संपादन, संवर्ग निर्माण, संकेतीकरण और सारणीकरण । विश्लेषण, व्याख्या और इतिवृत्त लेखन।

5– शोध प्रतिवेदन, परियोजना प्रतिवेदन

6– हिंदी शोध : नैतिक परिदृश्य ।

प्रश्नपत्र–5
लघु शोधप्रबन्ध

भाग–1 **लघु शोध प्रबन्ध** – **80 अंक**

भाग–2 **मौखिकी** – **20 अंक**

निर्देश : लघुशोध के विषय के बारे में चतुर्थ सत्रारंभ के समय विभागाध्यक्ष और पाठ्यक्रम समन्वयक इस बारे में निर्णय लेंगे। छात्र को विभाग द्वारा प्रदत्त विषय पर निर्धारित प्राध्यापक के निर्देशन में अनुसंधान–प्रविधि का उपयोग करते हुए शोधकार्य करना होगा। अनुमानतः 50–60 पृष्ठों में टंकित लघु शोध प्रबन्ध **दो प्रतियों** में छात्र/छात्रा को सत्रांत परीक्षा प्रारम्भ होने के कम–से–कम दो सप्ताह पूर्व विभाग में मूल्यांकनार्थ प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।

अथवा

परियोजना–कार्य

(क) **निम्नलिखित में परियोजना कार्य** : **(40 गुणा 4)** = **80 अंक**

(1) विभाग द्वारा निर्दिष्ट पुस्तक अथवा हिंदी फिल्म की 5/6 पृष्ठ में समीक्षा।

(2) किसी एक साहित्यिक/सांस्कृतिक पत्रिका अथवा कार्यक्रम पर 4/5 पृष्ठ में रिपोर्ट।

(ख) **मौखिकी** : = **20 अंक**

विस्तृत अध्ययन के लिए अनुशंसित ग्रंथ :

रामचरित मानस, उत्तरकांड, तुलसीदास, गीता प्रेस गोरखपुर
भारतीय साहित्य – डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ – राम विलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – डॉ. राम विलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा – डॉ. राम विलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और भारतीय नवजागरण – डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
साहित्यिक निबन्ध – डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
साहित्यिक निबन्ध – डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
आधुनिक साहित्यिक निबन्ध – डॉ. त्रिभुवन सिंह, रत्ना पब्लिकेशंस, वाराणसी।
संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।
छायावाद के आधार स्तम्भ – गंगा प्रसाद पाण्डेय
हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि – डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
निराला की साहित्य साधना (भाग–1, 2) – डॉ. राम विलास शर्मा
सुमित्रानन्दन पंत : जीवन और साहित्य (भाग–1, 2) – शांति जोशी
हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य राम चन्द्र शुक्ल
हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – राम कुमार वर्मा
हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (खण्ड–1, 2) – डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त
हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
हिन्दी साहित्य का इतिहास – सम्पादक डॉ. नगेन्द्र
अज्ञेय की कविता : एक मूल्यांकन – चन्द्रकान्त वांदिवडेकर
नागार्जुन की काव्य यात्रा – डॉ. रतन कुमार पाण्डेय
मुक्तिबोध की कविताई – अशोक चक्रधर
फणीश्वर नाथ रेणु और मैला आंचल – गोपाल राय
उपन्यासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – डॉ. त्रिभुवन सिंह
हिन्दी के प्रतिनिधि कहानीकार – डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
भारतीय साहित्य शास्त्र – गणेश–त्रयंबक देशपांडे
संस्कृत आलोचना – आचार्य बलदेव उपाध्याय
पाश्चात्य काव्य शास्त्र – डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा
पाश्चात्य काव्य शास्त्र : इतिहास, सिद्धान्त और वाद – डॉ. भगीरथ मिश्र
पाश्चात्य काव्य शास्त्र : सिद्धान्त और वाद – डॉ. नगेन्द्र
कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी
कबीर की विचारधारा – गोविन्द त्रिगुणायत
जायसी ग्रन्थावली – सम्पादक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (भूमिका भाग)
सिद्ध साहित्य – डॉ. धर्मवीर भारती
भ्रमगीत सार (भूमिका भाग) – रामचन्द्र शुक्ल
सूर की काव्य साधना – गोविन्द राम शर्मा
तुलसी काव्य मीमांसा – डॉ. उदय भानु सिंह
तुलसीदास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
मीरा : जीवन और काव्य (भाग 1, 2) – डॉ. सी.एल. प्रभात
अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय – डॉ. दीन दयालु गुप्त
गीतफरोश, भवानीप्रसाद मिश्र
मध्य हिमालयी भाषा, संस्कृति एवं साहित्य, भगवती नौटियाल, समय साक्ष्य, देहरादून

उत्तराखंड की लोकभाषाएं, डॉ. अचलानंद जखमोला, समय साक्ष्य, देहरादून
गढ़वाली शब्दकोश, समय साक्ष्य, देहरादून
गढ़वाल में पत्रकारिता और हिंदी साहित्य, डॉ. उमाशंकर थपलियाल, समय साक्ष्य, देहरादून
गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य, डॉ. जनार्दन प्रसाद काला, समय साक्ष्य, देहरादून
शब्द, भाषा और विचार, ताराचंद्र त्रिपाठी, समय साक्ष्य, देहरादून
लोकसंस्कृति : आयाम और परिप्रेक्ष्य – सं. महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, दुर्ग (म.प्र.) ।
नाट्यशास्त्र का पारिभाषिक संदर्भ–कोश – डॉ. ब्रजवल्लभ मिश्र, सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।
भाषा और संस्कृति – डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
भारतीय सिनेमा का अन्तःकरण – विनोद दास, मेधा बुक्स, दिल्ली ।
लोकतंत्र के सात अध्याय – सं. अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
सांस्कृतिक पत्रकारिता – डॉ. टी. डी. एस. आलोक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला ।
हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका – जगदीश्वर चतुर्वेदी, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
राष्ट्रीय जागरण और हिंदी पत्रकारिता का आदिकाल – सुजाता राय, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य – वीर भारत तलवार, हिमाचल पुस्तक भण्डार, दिल्ली ।
सरस्वती और राष्ट्रीय जागरण – डॉ. हर प्रकाश गौड़ नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
स्वतंत्रता आन्दोलन और हिंदी पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
गणेश शंकर विद्यार्थी और हिंदी पत्रकारिता – शम्भुनाथ, यशराज प्रकाशन, कोलकाता ।
हिंदी के प्रयुक्तिपरक आयाम – सं. सुरेश कुमार, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
प्रयोजनमूलक हिंदी –सं. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
हिंदी भाषा की संरचना – डॉ. भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
व्यावसायिक हिंदी – डॉ. दिलीप सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
भाषाविज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण, नई दिल्ली ।
हिंदी भाषा – डॉ. हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद ।
पारिभषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ, डॉ. भोलानाथ तिवारी , शब्दकार, दिल्ली ।
सम्पर्क भाषा हिंदी –सं. सुरेश कुमार एवं ठाकुर दास, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
भाषा (पत्रिका – नव., दिस., 2001 अंक), डॉ. शशि भारद्वाज, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली
जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य – जवरीमल्ल पारख, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली ।
जनसंचार इक्कीसवीं सदी – (सं.) कुमार आदर्श वर्मा, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली।
सूचना क्रान्ति की राजनीति और विचारधारा – सुभाष धूलिया, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली ।
जनसंचार माध्यम : चुनौतियाँ और दायित्व – डॉ. त्रिभुवन राय, युनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर ।
हिंदी भाषा का समाजशास्त्र – डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
नागरी लिपि और हिंदी–वर्तनी – डॉ. अनन्त चौधरी, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली।
भाषाशिल्प : विविध आयाम – डॉ. कुसुम अग्रवाल, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली ।
कोश विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, नई दिल्ली ।
कोश निर्माण : सिद्धान्त और परम्परा – डॉ. सुरेश कुमार, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
कोश विज्ञान – सुधा मंगेश कत्रे, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
कोश विज्ञान : सिद्धान्त एवं मूल्यांकन –सतीश कुमार रोहरा एवं पीताम्बर, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
विज्ञान–तकनीकी शब्दावली आयोग,केन्द्रीय हिंदी निदेशालय,दिल्ली से प्रकाशित बृहत् पारिभाषिक शब्दकोश।
शैली विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली ।
शैली और शैली विज्ञान – सं. डॉ. सुरेश कुमार एवं डा. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिंदी संस्थान,
रीति विज्ञान – डॉ. विद्यानिवास मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
हिंदी भाषा : अतीत से आज तक –विजय अग्रवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

प्रशासन में राजभाषा हिंदी – डॉ. नारायण दत्त पालीवाल, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।
कार्यालयी हिंदी – ठाकुर दास, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली ।
केन्द्रीय सचिवालय कार्यालय पद्धति – कार्मिक और प्रशासनिक सुधार विभाग, नई दिल्ली ।
सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग – गोपीनाथ श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
भारतेन्दु युग और हिंदी भाषा की विकास परम्परा – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
हिंदी पत्रकारिता का बृहद् इतिहास – डॉ. अर्जुन तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
हिंदी पत्रकारिता : विविध आयाम (भाग–1 , सं. 2) – डॉ. वेदप्रताप वैदिक, हिंदी बुक सेन्टर, नई दिल्ली
बृहद् हिंदी पत्र–पत्रिका कोश : डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
अनुवाद विज्ञान – सं. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
अनुवाद विज्ञान – डॉ भोलानाथ तिवारी, शब्दकार, दिल्ली ।
पत्रकारिता में अनुवाद की समस्याएँ – डॉ. भोलानाथ तिवारी तथा जितेन्द्र गुप्त शब्दकार, दिल्ली
भारतीय भाषा और हिंदी अनुवाद : समस्या समाधान – डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
अनुवाद और मशीनी अनुवाद – सं. गार्गी गुप्त तथा अन्य, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली
अनुवाद : विविध आयाम – माणिक गोपाल चतुर्वेदी तथा कृष्ण कुमार गोस्वमी, केन्द्रीय हिंदी संस्थान
अनुवाद पत्रिका (अनुवाद शतक विशेषांक)– सं. नीता गुप्ता,भारतीय अनुवाद परिषद,नई दिल्ली।
जनमाध्यम और पत्रकारिता (प्रथम खण्ड) – प्रवीण दीक्षित, सहयोगी साहित्य संस्थान, कानपुर ।
फीचर लेखन : स्वरूप और शिल्प – डॉ. मनोहर प्रभाकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
हिंदी इण्टरव्यू : उद्भव और विकास – डॉ. विष्णु पंकज, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर ।
हिंदी समाचार बुलेटिन (भाषा के कुछ आयाम) – भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली ।
कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग – विजय कुमार मल्होत्रा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ।
भाषा शोध – प्रो. मनोज दयाल, हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा ।
सामाजिक विज्ञानों की शोध पद्धतियाँ – डॉ. सत्यदेव, हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा ।
सामाजिक सर्वेक्षण–अनुसंधान की अन्वेषण पद्धतियाँ–डॉ. सी. एल. शर्मा, राजस्थान हिंदी
अकादमी।
शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि – डॉ. बैजनाथ सिंहल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
काव्यभाषा पर तीन निबंध – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।